International Journal of Multidisciplinary Research and Development
Online ISSN: 2349-4182, Print ISSN: 2349-5979, Impact Factor: RJIF 5.72
www.allsubjectjournal.com
Volume 3; Issue 8; August 2016; Page No. 370-374

महिला शिक्षा तथा आर्थिक गतिविधियाँ एवं परिवार के आकार में अन्तःसम्बन्ध (नगरीय क्षेत्र बहेड़ी के सम्बन्ध में एक विश्लेषण)

[1] Dr Mohammad Israr Khan, [2] Nisha

[1] Assistant Professor, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

[2] Research Scholar, Department of Applied and Regional Economics, Mahatma Jyotiba Phule Rohilkhand University, Bareilly, Uttar Pradesh, India

सारांश

नारी शिक्षा महिलाओं के सामाजिक–आर्थिक एवं राजनीतिक सशक्तिकरण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण अशिक्षा का निर्वहन करती है। देखा गया है कि शिक्षित एवं आर्थिक आत्मनिर्भर महिलायें परिवार के आकार एवं आर्थिक स्तर निर्माण में विनिश्चय कारक का कार्य करती है। शिक्षा द्वारा महिलाये एक तरफ तो एक बेहतर गृहणी बनती है तथा दूसरी तरफ एक उत्तम आर्थिक एजेन्ट का रुप धारण करती हैं। दुर्भाग्यवश, भारतवर्ष के ग्रामीण एवं अर्द्ध शहरी परिवेश तथा निम्न सामाजिक स्तरों पर महिला शिक्षा, फलतः आर्थिक सशक्तिकरण, अत्यन्त निम्न स्तरीय पाया जाता हैं।

वर्तमान शोध पत्र एक अर्द्धशहरी–परिवेश में महिला शिक्षा, महिलाओं की आर्थिक भागीदारी तथा परिवार के आकार में महिलाओं की भूमिका का सरल विश्लेषण करता है। सर्वेक्षण द्वारा प्राप्त सूचना के आकार पर निष्कर्ष निकाला गया है कि अध्ययनरत अर्द्ध शहरी–परिवेश में नारी शिक्षा की दशा सोचनीय है। शिक्षा का अभाव महिलाओं की आर्थिक शक्तियों को सीमित करता है, तथा शिक्षा तथा परिवार–आकार में सीधा सम्बन्ध है।

मूलशब्द: महिला शिक्षा, आर्थिक योगदान, परिवार–आकार, महिला सशक्तिकरण, नारीवाद।

1. प्रस्तावना

एक परिवार, समाज और देश के विकास में नारी का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है, लेकिन फिर भी आज हमारे देश में सबसे ज्यादा पतन नारी जाति का ही हो रहा है। हम सभी जानते है कि भारत देश पुरूष प्रधान देश है, यहाँ समाज में पुरूषों का बोल–बाला है। यहाँ पुरूषों को हर क्षेत्र में प्राथमिकता दी जाती है फिर चाहे वह शिक्षा हो या घर के बाहर निकल कर उत्पादन करने की आजादी हो इन सभी क्षेत्रों में पुरूषों को प्राथमिकता दी जाती है, जबकि महिलाओं को इन क्षेत्रों में रोक–टोक का सामना करता पड़ता है। शिक्षा से भी महिलाओं को वंचित रखा जाता है। घर से बाहर निकलकर उत्पादन करने की भी स्वतंत्रता नहीं दी जाती है।

वर्तमान में नारियों की स्थिति में थोड़ा सुधार हुआ है, लेकिन पूर्णतयाः नहीं। शहरी तथा नगरीय क्षेत्र में महिलाओं को पढ़ने–लिखने की स्वतंत्रता है। यहाँ महिलाऐं अपने अधिकारों के प्रति पूर्ण रूप से सजग हैं वहीं दूसरी ओर ग्रामीण महिलाऐं आज भी चारदीवारी में कैद हैं और पर्दा प्रथा जैसी कुप्रथाओं की शिकार हो रही हैं। ग्रामीण महिलाओं का जीवन आज भी घरेलू कामकाज तक ही सीमित है।

ऐसी स्थिति में आज की नारी के लिए शिक्षा का महत्व और भी बढ़ जाता है। भारत में आधी आबादी केवल महिलाओं की है। इसका अर्थ यह है कि पूरे देश के विकास के लिए इस आधी आबादी की जरूरत है जो अभी भी सशक्त नहीं है और कई समाजिक प्रतिबन्धों से बंधी हुई हैं। आज जरूरत है कि समाज, सरकार, पुरूष और खुद महिलाओं के द्वारा महिला सशक्तीकरण को बढ़ावा दिया जाये। नारी को आर्थिक रूप से स्वावलम्बित बनने की आवश्यकता है।

भारत में महिलाओं को सशक्त बनाने के लिए सबसे पहले समाज में उनके अधिकारों और मूल्यों को मारने वाले मिथ्य विचारों को खत्म करना जरूरी है, दहेज प्रथा, अशिक्षा, यौन हिंसा, असमानता, भ्रूण हत्या, महिलाओं के प्रति घरेलू हिंसा, बलात्कार, वैश्या–वृत्ति, मानव तस्करी और ऐसे ही अन्य दूसरे विषय हैं जो देश को पीछे की ओर धकेलते हैं और देश के विकास के पथ में बाधक हैं।

भारत देश में आज भी लड़का और लड़की में भेदभाव किया जाता है। जहाँ एक ओर लड़कों की पढ़ाई–लिखाई पर, खानपान पर तथा अन्य सुविधाओं पर अधिक ध्यान दिया जाता है। वहीं दूसरी ओर लड़कियों की शिक्षा पर, खानपान पर तथा और अन्य सुविधाओं पर कम ध्यान दिया जाता है। जहाँ लड़कों को उच्च शिक्षा दी जाती है, वहीं दूसरी ओर लड़कियों को नाम मात्र ही स्कूल भेजा जाता है। कुछ गांव तो ऐसे भी है जहाँ लड़कियों को स्कूल ही नही भेजा जाता है। जो लोग अपनी लड़कियों को स्कूल भेजते भी है तो दसवीं और बारहवीं पास कराकर लड़कियों को स्कूल जाने से रोक देते हैं।

2. शोध उद्देश्यः

इस शोध के निम्नलिखित तीन मुख्य उद्देश्य है

1. महिलाओं के शैक्षिक स्तर का विश्लेषण करना।
2. परिवार के आकार में महिला शिक्षा की भूमिका का अध्ययन करना।
3. महिला शिक्षा द्वारा महिलाओं की आर्थिक गतिविधियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना।

3. शोध साहित्य समीक्षा

डा0 प्रीत अरोड़ा (2012) के अनुसार प्रत्येक वर्ष 8 मार्च के दिन महिला दिवस राष्ट्रीय और अन्तर्राराष्ट्रीय स्तर पर मनाया जाता है। हर जगह महिला सम्मेलन समाज सुधारकों द्वारा विविध कार्यक्रम

एवं महिला गोष्ठियाँ की जाती हैं जिसमें आज भी नारी के पढ़–लिखे सशक्त रूप की बात की जाती है। आज नारी राजनीति, प्रशासनिक, ज्ञान–विज्ञान आदि प्रत्येक क्षेत्र में आग बढ़ रही हैं परन्तु हम भारत देश में उन अशिक्षित एवं ग्रामीण क्षेत्रों के पिछड़े हुए नारी वर्ग की स्थिति पर अधिक ध्यान नहीं देते।

मधुसूदन त्रिपाठी (2006) के अनुसार बालिका किसी भी समाज की महत्वपूर्ण कड़ी होती है, जो बड़ी होकर पत्नी, माँ, बहन और परिवार की आय उपार्जक बनकर महत्वपूर्ण भूमिकायें अदा करती है। लेकिन दुख बस इस बात का है कि आज भी बालिका का जन्म होना अशुभ माना जाता है। जिसके लिये हिंदू समाज और मनुस्मृति जिम्मेदार है। वैश्वीकरण और भूमण्डलीकरण के युग में आज भी महिलायें हाशियें पर है। उन्हें आज भी हीन भावना से देखा जाता है।

डॉ0 पुनीत बिसारिया (2012) के अनुसार सरकार ने स्त्री शिक्षा को प्रोत्साहित करने के लिये अनेक कार्यक्रम तथा योजनायें चलाई है, परन्तु फिर भी अपेक्षित विकास एवं सफलता हासिल नहीं हो सकी है। आज भी देश की अनेक बालिकायें ऐसी हैं, जो अपने पूरे जीवन–काल में स्कूल का मुँह नहीं देख पाती हैं। जो बालिकायें किसी तरह स्कूल तक पहुँच भी जाती हैं। वे आगे की पढ़ाई जारी नहीं रख पाती हैं।

वंदना भार्गव (2016) के अनुसार शिक्षा एक ऐसा रत्न हैं, जो इन्सान और जानवर में फर्क निश्चित करती है। शिक्षा के बिना इन्सान जानवरों से भी बदत्तर है। शिक्षा इन्सान की प्राथमिक जरूरत है। हमारे समाज में पुरूष शिक्षा पर तो प्रारम्भ से बल दिया जाता है। परन्तु स्त्री शिक्षा पर कोई ठोस विचार नहीं किया गया। आज उच्च वर्ग की महिलायें तो शिक्षित हैं, परन्तु कुछ गांवों में आज भी महिला शिक्षा उपलब्ध नहीं हैं, वहाँ सिर्फ घर के कामों तक महिलाओं को सीमित रखा जाता है।

मालिनी घोष (2002) के अनुसार अध्ययन और लेखन में सीखने की प्रक्रिया मस्तिष्क में याद रखने से अधिक प्रभावशाली है। वेचारी गरीब ग्रामीण औरतों के लिए साक्षरता एक ऐसी रंगभूमि के समान है जहाँ योग्यता के ढांचें में निर्माण में विषादित तथ्य एवं अलोचनात्मक भावनाओं को परास्त किया है। यह भाषा साक्षरता एवं जीवन के कुछ पहलुओं पर प्रभाव डालने का विषय है अर्थात् नारी का सशक्तिकरण।

4. शोध–विधि

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी द्वारा जनपद बरेली के विकास खण्ड बहेड़ी में "महिला शिक्षा तथा आर्थिक गतिविधियाँ एवं परिवार के आकार में अन्तः सम्बन्ध" का विश्लेषण किया गया है। यह शोध प्राथमिक व द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित है। इस शोध में शोधार्थी द्वारा 50 महिलाओं का न्यादर्श लिया गया है। प्राथमिक आँकड़ों को एकत्र करने के लिए सर्वप्रथम शोध प्रश्नावली तैयार किया गया है और फिर इन प्रश्नों के उत्तर 50 महिलाओं से प्रश्न पूछ कर प्राप्त किए गये है। शोध विषय से संबंधित आवश्यक द्वितीयक आँकड़ों को एकत्र करने के लिए इंटरनेट, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों से प्राप्त आँकड़ों को माध्यम बनाया गया है। एकत्रित आँकड़ों का वर्गीकरण, सारणीयन, विश्लेषण तथा अन्य सांख्यिकीय विधियों का प्रयोग करके विश्लेषण किया गया हैं।

5. विश्लेषण

जनपद बरेली के नगरीय क्षेत्र बहेड़ी में महिला शिक्षा तथा आर्थिक गतिविधियाँ एवं परिवार के आकार में अन्तःसम्बन्ध का विश्लेषण निम्नलिखित तालिकाओं द्वारा दर्शाया गया है।

5.1 महिलाओं की आयु का प्रतिशत

निम्नलिखित तालिका संख्या 01 में नगरीय क्षेत्र बहेड़ी की महिलाओं की आयु के प्रतिशत को दर्शाया गया है।

तालिका 01: महिलाओं की आयु का प्रतिशत

आयु	महिलाओं की संख्या	प्रतिशत
20–30	21	42 प्रतिशत
30–40	23	46 प्रतिशत
40–50	6	12 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

सर्वेक्षण में 30 से 40 वर्ष की आयु की महिलाओं का प्रतिशत सर्वाधिक पाया गया है।

5.2 महिलाओं की जाति का प्रतिशत

निम्नलिखित तालिका संख्या 02 में नगरीय क्षेत्र बहेड़ी की महिलाओं की जाति का प्रतिशत बताया गया है।

तालिका 02: महिलाओं की जाति का प्रतिशत

वर्ग	संख्या	प्रतिशत
पिछड़ा वर्ग	30	60 प्रतिशत
अनुसूचित वर्ग	11	22 प्रतिशत
सामान्य वर्ग	9	18 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

सर्वेक्षण में पिछड़ा वर्ग की महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है। 60 प्रतिशत महिलायें ऐसी है जो पिछड़ा वर्ग में आती है जबकि अनुसूचित वर्ग की 22 प्रतिशत और सामान्य वर्ग की 18 प्रतिशत महिलायें सर्वेक्षण में शामिल है।

5.3 महिलाओं के धर्म का प्रतिशत

निम्नलिखित तालिका संख्या 03 में नगरीय क्षेत्र बहेड़ी की महिलाओं के धर्म का प्रतिशत में विवरण दिया गया है।

तालिका 03: महिलाओं के धर्म का प्रतिशत

धर्म	संख्या	प्रतिशत
हिन्दू	44	88 प्रतिशत
ईसाई	6	12 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

सर्वेक्षण में 88 प्रतिशत महिलायें हिन्दू धर्म की तथा 12 प्रतिशत महिलायें ईसाई धर्म की है।

5.4 महिलाओं का शैक्षिक स्तर

निम्नलिखित तालिका संख्या 04 में नगरीय क्षेत्र बहेड़ी की महिलाओं का शैक्षिक स्तर का विवरण दिया गया है।

तालिका 04: महिलाओं का शैक्षिक स्तर

कक्षा	संख्या	प्रतिशत
08	05	10 प्रतिशत
10	09	18 प्रतिशत
12	12	24 प्रतिशत
स्नातक	09	18 प्रतिशत

स्रोत–सर्वेक्षण

सर्वेक्षण में पाया गया कि 10 प्रतिशत महिलायें कक्षा 8 तक पढ़ी हुई है, 18 प्रतिशत महिलायें 10 वीं पास है, 24 प्रतिशत महिलायें मैट्रिक पास है तथा 18 महिलायें स्नातक है।

5.5 महिला शिक्षा का परिवार के आकार पर प्रभाव

निम्नलिखित तालिका संख्या 05 में नगरीय क्षेत्र बहेड़ी की महिला शिक्षा का परिवार के आकार पर प्रभाव को बताया गया है।

तालिका 05: महिला शिक्षा का परिवार के आकार पर प्रभाव

कक्षा	महिलाओं की संख्या	बच्चों की संख्या	कुल	औसत
01 से 08	5	5, 4, 6, 5, 5	25	5
10	9	5, 3, 6, 4, 6, 3, 3, 2, 4	36	4
12	12	2, 4, 3, 3, 2, 1, 3, 5, 4, 2	36	3
स्नातक	9	1, 3, 3, 4, 2, 4, 2, 1, 2	22	2.44

स्रोत–सर्वेक्षण

जैसे–जैसे शिक्षा का स्तर बढ़ता जा रहा है, वैसे–वैसे परिवार का आकार घटता जा रहा है। इसका अर्थ यह है कि शिक्षा और परिवार के आकार के मध्य विपरीत सम्बन्ध होता है। इस सम्बन्ध को नीचे ग्राफ द्वारा भी दर्शाया गया है।

5.6 महिलाओं का शैक्षिक स्तर तथा बच्चों की संख्या का औसत

निम्नलिखित ग्राफ संख्या 01 में महिलाओं का शैक्षिक स्तर तथा बच्चों की संख्या का औसत विवरण दिया गया है।

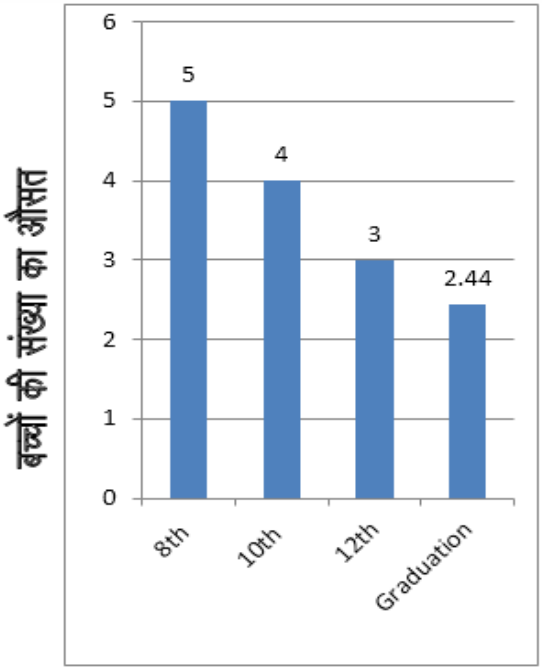

आकृति 1: महिलाओं का शैक्षिक स्तर

5.7 महिला शिक्षा तथा आर्थिक गतिविधियां एवं परिवार का आकार में अन्तः सम्बन्ध

प्रस्तुत तालिका में तहसील बहेड़ी क्षेत्र में नारी शिक्षा एवं आर्थिक क्षेत्र में भगीदारी तथा परिवार आकार में सम्बन्ध को दर्शाया गया है।

तालिका 06: महिला शिक्षा तथा आर्थिक गतिविधियां एवं परिवार का आकार में अन्तः सम्बन्ध

प्रश्न	उत्तर	नम्बर	प्रतिशत
आयु	24 से 45 तक	50	
जाति	पिछड़ी	30	60:
	एस0सी0	11	22:
	सामान्य	9	18:
धर्म	हिन्दू	44	88:
	इसाई	6	12:
कार्य	व्यवसाय	6	12:
	घरेलू कार्य	3	6:
शैक्षिक स्तर	शिक्षित	35	70:
	अशिक्षित	15	30:
परिवार का आकार	संयुक्त	10	20:
	एकल	40	80:
पति की मासिक आय	10000 से कम	20	40:
	10000 से अधिक	30	60:
पति का व्यवसाय	नौकरी	35	70:
	अन्य कार्य	15	30:
दाम्पत्य अवधि	5 वर्ष से कम	4	8:
	10 वर्ष से अधिक	38	76:
	20 वर्ष से अधिक	8	16:
बच्चों की संख्या	2 से कम	20	40:
	2 से अधिक	30	60:
स्कूली बच्चों की संख्या	2 से कम	10	20:
	2 से अधिक	40	80:
किस पर अधिक ध्यान देते हैं	लड़का	50	100:
	लड़की	50	100:
दैनिक दिनचर्या	घरेलू कार्य	47	94:
	अन्य कार्य	3	6:
घरेलू काम में लगा समय	5 घण्टे से कम	16	32:
	5 घण्टे से अधिक	34	68:
उत्पादन कार्य में लगा समय	5 घण्टे से कम		
	5 घण्टे से अधिक	3	6:
उत्पादन कार्य स्थल	घर	1	2:
	घर के बाहर	2	4:
उत्पादन से प्राप्त मासिक आय	10000 से कम	1	2:
	20000 से कम	2	4:
स्वंय पर होने वाला व्यय	10: से कम	3	6:
	15: से अधिक		
बच्चों पर होने वाला व्यय	20: से अधिक	2	4:
	20: से कम	1	2:
अन्य खर्चों पर व्यय	40: से कम	2	4:
	30: से कम	1	2:
मनोबल पर प्रभाव	अच्छा	3	6:
	बुरा		
पति पर आर्थिक निर्भरता को कैसा समझते हैं	अच्छा	49	98:
	बुरा	1	2:

स्रोत–सर्वेक्षण

5.8 तालिका का विश्लेषण

1. सर्वेक्षण में पाया गया कि 40 प्रतिशत महिलाओं के पति की आय 10000 से कम है जबकि 60 प्रतिशत महिलाओं के पति की आय 10000 से अधिक है।
2. सर्वेक्षण में पाया गया है कि 70 प्रतिशत महिलाओं के पति नौकरी करते है, जबकि 30 प्रतिशत महिलाओं के पति अन्य कार्य करते है।

3. सर्वेक्षण में पाया गया कि 16 प्रतिशत महिलायें ऐसी है जिनकी दाम्पत्य की अवधि 20 वर्ष से अधिक है, 76 प्रतिशत महिलाओं की दाम्पत्य की अवधि 10 वर्ष से अधिक है और 8 प्रतिशत महिलाओं की दाम्पत्य अवधि 5 वर्ष से कम है।
4. सर्वेक्षण में पाया गया कि 40 प्रतिशत महिलाओं के बच्चों की संख्या 2 से कम है और 60 प्रतिशत महिलाओं के बच्चों की संख्या 2 से अधिक है।
5. सर्वेक्षण में पाया गया कि 20 प्रतिशत महिलाओं के स्कूली बच्चों की संख्या 2 से कम है, 80 प्रतिशत महिलाओं के स्कूली बच्चों की संख्या 3 से अधिक है।
6. सर्वेक्षण में 100 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वे लड़का व लड़की को एक समान समझती हैं, लेकिन महिलाओं का यह जबाव पूर्णतयाः सही नही हैं। सर्वेक्षण माता–पिता के द्वारा लड़का–लड़की को एक समान नही समझा जाता हैं। लड़को की शिक्षा पर, खान–पान पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है और लड़कों पर होने वाले सालाना खर्च भी लड़कियों पर होने वाले व्यय से अधिक है।
7. सर्वेक्षण में पाया गया कि 94 प्रतिशत महिलायें सिर्फ घरेलू कार्य करती है बाकी 6 प्रतिशत महिलायें घरेलू कार्य के साथ उत्पादन कार्य भी करती हैं। इस सर्वेक्षण में यह पाया गया कि 32 प्रतिशत महिलायें 5 घण्टे से कम समय में घरेलू कार्य निपटा लेती है। वहीं 68 प्रतिशत महिलायें घरेलू कार्य के लिए 5 घण्टे से अधिक समय कार्य करती है।
8. सर्वेक्षण में पाया गया कि 50 महिलाओं में से 3 महिलायें यानी 6 प्रतिशत महिलायें उत्पादन कार्य करती है तथा उत्पादन कार्यो में 5 घण्टे से अधिक श्रम करती है। सर्वेक्षण में यह पाया गया कि जो तीन महिलायें उत्पादन कार्य करती हैं। उनमें से 1 महिला का उत्पादन स्थल घर है क्योंकि वह एक ब्यूटी पार्लर चलाती है। जो कि उसके घर पर ही है जबकि अन्य 2 महिलायें घर के बाहर कार्य करती है, जिसमें से एक सरकारी नौकरी करती है तथा दूसरी महिला सरकारी अस्पताल में प्राईवेट तौर पर कार्य करती है। इस प्रकार 50 महिलाओं के सर्वे में सिर्फ 3 महिलायें कामकाजी है यानी सशक्त है।
9. सर्वेक्षण में पाया गया कि कामकाजी महिलाओं में 2 प्रतिशत महिलाओं को उत्पादन कार्य से प्राप्त होने वाली मासिक आय 10000 से कम है तथा शेष 4 प्रतिशत महिलाओं को प्राप्त होने वाली मासिक आय 10 हजार से अधिक है। उत्पादन कार्य से प्राप्त होने वाली आय का स्वयं पर मुश्किल से 8 से 10 प्रतिशत ही खर्च कर पाती हैं। बाकी आय बच्चों पर तथा अन्य पर व्यय होती है। 4 प्रतिशत कामकाजी महिलायें स्वय की आय का 20 प्रतिशत से अधिक तथा 2 प्रतिशत महिलायें 20 प्रतिशत से कम खर्च करती है।
10. सर्वेक्षण में यह पाया गया कि जो 3 महिलायें उत्पादन कार्य करती है, उनके मनोबल पर अच्छा प्रभाव पड़ता है। यह महिलायें आर्थिक रूप से अपने पतियों पर निर्भर नही है। इन कामकाजी महिलाओं में 2 महिलाये तो ऐसी है जो पूर्ण अशिक्षित है। अशिक्षित होने के बाबजूद वह उत्पाइन कार्य कर रही हैं।
11. सर्वेक्षण में यह पाया गया कि 99 प्रतिशत महिलाओं ने कहा कि वह अपने पतियों पर आर्थिक निर्भरता को गलत नही मानती है, जब कि शोध छात्रा को यह ज्ञात हुआ कि यह जबाव पूर्णतः सत्य नही है। महिलायें यह जबाव सिर्फ मजबूरी में दे रही है, कहीं न कहीं इन महिलाओं के अर्न्तमन में घर से बाहर उत्पादन कार्य करके आत्म–निर्भर बनने की इच्छा दबी हुई है, क्योंकि इन महिलाओं का शैक्षिक स्तर बहुत निम्न है। जिस परिवार में यह महिलायें रहती है, वह पितृ सत्तात्मक परिवार है। इसलिए पतियों द्वारा इन महिलाओं को घर से बाहर निकलकर कार्य करने की इजाजत नही दी जाती है।

6. प्राप्तियॉ

1. लगभग 94 प्रतिशत महिलायें ऐसी है जो कि अपने परिवार की आर्थिक आय में योगदान नही दे पा रही है, लेकिन यह कहना पूर्णतः गलत होगा कि इन महिलाओं का परिवार की आय में कोई योगदान नही है, क्योंकि एक महिला जो घरेलू कार्य करती है यदिव उसके समस्त घरेलू कार्यों को बाजार मूल्य स्तर पर आंका जाये तो पैसा कमाने वाले पतियों की अपेक्षा आर्थिक स्तर में ऐसी घरेलू महिलाओं का योगदान कही अधिक होगा लेकिन घरेलू कार्य करने वाली महिलाओं को घरेलू कार्यो का आर्थिक रूप से मूल्यांकन नही किया जाता है। यही कारण है कि घरेलू कार्य करने वाली महिलाओं का आर्थिक स्थिति में कोई योगदान नही माना जाता है।
2. सर्वे क्षेत्र में नारी शिक्षा का स्तर बहुत निम्न है। हमने 50 महिलाओं का सर्वे किया जिनमें सिर्फ 70 प्रतिशत महिलायें ही शिक्षित है, वाकी 30 प्रतिशत महिलायें अशिक्षित हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि पुरूष पारिवारिक सदस्यों द्वारा सामाजिक राजनीतिक अधिकारों, काम करने की आजादी, शिक्षा का अधिकार, महिलाओं के लिए प्रतिबन्धित कर दिया गया है। इसलिए नारी को उसके अधिकारों के प्रति जागरूक करने की आवश्यकता है।
3. महिलाओं को जीवन घरेलू कार्यो तक ही सीमित है। इसके दो मुख्य कारण है। पहला तो यह है कि महिला शिक्षित नही है और अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नही है। दूसरा कारण यह है कि सर्वे क्षेत्र में पितृ सत्तात्मक भावना व्याप्त है। इसकी वजह से पुरूषों द्वारा महिलाओं को घर में कैद कर दिया गया है।
4. लगभग 94 प्रतिशत महिलायें ऐसी है जो अपने परिवार की आय में आर्थिक रूप से मददगार नही है। इन महिलाओं के पतियों द्वारा ही पैसा कमाया जाता हैं, लेकिन ऐसा कहना कि आर्थिक मददगार नही है, गलत होगा क्योंकि महिलाओं के घरेलू कार्यो का मूल्यांकन किया जाये तो महिलाओं का योगदान पतियों की तुलनाओं में कही अधिक होगा।

7. निष्कर्ष

सर्वेक्षण में 30 से 40 वर्ष की आयु की महिलाओं का प्रतिशत सर्वाधिक पाया गया है, साथ ही सर्वेक्षण में पिछड़ा वर्ग की महिलाओं की संख्या सर्वाधिक है। 60 प्रतिशत महिलायें ऐसी है जो पिछड़ा वर्ग में आती है जबकि अनुसूचित वर्ग की 22 प्रतिशत और सामान्य वर्ग की 18 प्रतिशत महिलायें सर्वेक्षण में शामिल है। सर्वेक्षण में 88 प्रतिशत महिलायें हिन्दू धर्म की तथा 12 प्रतिशत महिलायें ईसाई धर्म की है। 50 महिलाओं के सर्वेक्षण में यह पाया गया कि सिर्फ 6 प्रतिशत महिलायें ऐसी है जो कि उत्पाउदन कार्य करती है। बाकी 54 प्रतिशत महिलायें घरेलू कार्य तक ही सीमित है। इसका अर्थ यह है कि महिलायें अपने अधिकारों के प्रति जागरूक नही हैं। सर्वेक्षण में पाया गया कि 50 महिलाओं में से सिर्फ 35 महिलायें यानी कि 52 प्रतिशत महिलायें ही शिक्षित है। सर्वेक्षण में पाया गया कि कामकाजी महिलाओं को छोड़कर वाकी 47 महिलायें अपने खर्च के लिए अपने पति द्वारा कमाये जा रहे पैसे पर ही निर्भर रहती है। अतः इसलिए यहॉ महिला सशक्तिकरण की जरूरत बढ़ जाती है, क्योंकि हमेशा से ही या फिर यह कहा जाये कि पुराने समय से ही भारत में लैंगिक असमानता थी, पुरूष प्रधान समाज था और पितृ सत्तात्मक परिवार थे। इन स्थितियों में आज भी कोई बदलाव नही आया है।

8. सन्दर्भ सूची:

1. डॉ0 प्रीत अरोड़ा नारी–समाज की उन्नति के सोपान शिक्षा एवं आत्म निर्भरता (आर्टिकल) 2012. http://www.himalini.com
2. मधूसूदन त्रिपाठी बालिका शिक्षा, विद्यावती प्रकाशन (साहित्य कुन्ज), नई दिल्ली. 2006, 2292-9754 www.sahityakunj.net
3. पुनीत विसारिया स्त्री शिक्षा का वर्तमान परिदृश्य. 2012. www.jagranjuction.com
4. वन्दना भार्गव स्त्री शिक्षा का महत्व (आर्टिकल). 2016. www.swadesh.news
5. मालिनी घोष इकॉनॉमिक एण्ड पॉलिटिकल वीकली. साक्षरता, योग्यता और सामर्थ्य शक्ति का प्रभाव पर शोध एवं कार्य. ''समीक्षा'' (बुक) ट्रस्ट पब्लिकेशन मुम्बई. 2002.